धर्म जीवन

सितम्बर - 2013

* नया देव आश्रम
* दिल करता है
* आत्मिक उच्च परिवर्तन का काम सबसे बढ़िया काम है
* गुरू असरों का शाहकार
* बरसी की सभा
* बहन हो तो ऐसी
* शुभ संग्राम

नया देव आश्रम

पाठक गण और सब सेवक समूह को यह खुशखबरी देना चाहते हैं कि देव धर्म को एक बार फिर देव आश्रम मिल गया। आशा है इस खुशखबरी से जहां सब को बहुत खुशी प्राप्त होगी, वहां सेवक समूह का उत्साह बढ़ेगा।

सहायकारी शक्तियों की विशेष सहायता से सौभाग्यवान साथी सेवक के उद्धम से देव धर्म को एक एकड़ के लगभग ज़मीन का टुकड़ा डेराबसी के पास, बिल्कुल अम्बाला चण्डीगढ़ हाईवे के लगभग ऊपर, देव धर्म के कारज के लिए प्राप्त हो गया है। जो ज़ीरकपुर चौक से 7-8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

पूरी पूरी आशा है कि इस साल का मुबारक महोत्सव जो 16 दिसम्बर से 19 दिसम्बर तक है, इस भाग्यशाली स्थान पर ही मनाया जाना चाहिए।

परम पू० भगवान का जो शुभ कारज देव धर्म मिशन की ओर से सन 1988 से हो रहा है, इस मिशन को अपने स्थान की विशेष अवश्यकता थी। बेशक श्रद्धेय धर्म बल जी के दामाद डा० सेवक प्रसाद जी और उनके सपुत्र सुशील कुमार जी की विशेष उदारता और मेहरबानी से 22-23 वर्ष का लम्बा समय महोत्सव, उत्सवों और ईतवार की सभाओं के लिए 18-डी धर्म शाला प्राप्त रही। परन्तु अब उनके बाद स्थान की सख़्त ज़रूरत थी। नेचर की विकासकारी शक्तियों ने इस अवश्यकता को पूरा कर दिया, यह बहुत ही मुबारक बात है।

अब साल में कुछ महीने, दस दस या पन्द्रह पन्द्रह दिनों की लगातार संगत यहां आसानी से हो सकती है। पुराने या रिटायरड दम्पति या अकेले धर्म सम्बन्धी या और सच्चे चाहवान साथी सेवक कोई गुरू शिक्षा के शिक्षार्थी यहां लगातार ठहर कर अपना भला कर सकेंगे। सच्ची प्रभाव दायक सत्संग, जिसमें लगातार शामिल होकर, परिवारों के बच्चे लाभ उठा सकें, यह सहूलियत अब यहां प्राप्त हो सकेगी। इस काम के लिए सब ज़रूरते जल्दी से जल्दी जुटाने का यत्न किया जा रहा है।

- मन्त्री देव धर्म

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 9
सितम्बर – 2013
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

दिल करता है

जब मैं परम पू० देव रूप के सूर्य की रोशनी की चमक देखता हूं, सब प्रकार के सत्य के इश्क, चारों जगतों की भलाई का इश्क, सब के भले के इश्क का सूर्य चमकता हुआ देखता हूं, उसके अद्भुत नूर के तेज की लाली देखता हूं, उनकी अजब, मनोहर रिश्मों से इसी पृथ्वी पर चमकारे की वर्षा होती हुई देखता हूं, जिस वर्षा ने सोई हुई, मदहोश रूहों को जगा दिया है, जिस वर्षा ने डूबती हुई रूहें बचाई, जिसने उजड़ती हुई रूहों को बसाया, इस पापों के सागर में एक देव नगरी का टापू बसाया है, तो मैं एक अनोखे सरूर से नाच उठता हूं, तब मेरा दिल करता है कि मैं एक शैदाई (पागल) जैसा हो जाऊं और गलियों, कूचों में यह पुकार गुंजा दूं कि "पापियों को तारने के लिए देवात्मा जगत में आया, पापियों को तारने"।

जब मैं देखता हूं कि देव सूर्य्य की चमक ने तुरन्त कुछ परवाने मनुष्यों की भीड़ में अपने प्रति अकर्षित किए थे, श्रद्धेय जी, श्री परमेश्वर देव, श्री देवत्व सिंह जी, भाई अमर सिंह जी, पहले पहल देव नगरी से आकर जुड़े, उनके तपों त्यागों को निहारता हूं, उन झुझारूओं ने जो बेसरो समानी में जो कुछ कष्ट वा दुख उठाए जो जवानियां कुर्बान कर दी, जो जवानी में ही निस्सार हो गए, उन्होंने गुरू के अमृत को पहचाना, उसे आप सेवन किया, और दिवानों की तरह चारों ओर सोई हुई आत्माओं को जगाने के लिए विरान स्थानों पर निकल पड़े, जो हृदयों में नर्क को मिटाने और स्वर्ग पैदा करने के लिए जी जान की बाजी लगाने के लिए चल निकले, उनके दुखों, उनकी कुर्बानी, उनका सर्वस्व कुर्बान करने के फल पैदा होने आरम्भ हो गए, जो एक सदी या इससे भी अधिक सहाय होते रहे। हीरे जैसी रूहों की कतार इकट्ठी हो गई। भाई साहिब मोहन देव जी, सरदार जमीयत सिंह जी, स्वामी गोबिन्द राम जी, पंडित हर नरायण जी अग्निहोत्री साहिब, आदि जैसे नैतिकता के स्तम्भ खड़े हो गए। मनुष्य मात्र से नीचता और पिशाचत का नर्क मिटाने और सच्चा स्वर्ग लाने वाले देवत्व के सूरज ने अपने अद्भुत तेज द्वारा और समान जुटा दिए। गुरू अमृत संचार होने से फरिश्तों का एक और काफला जुड़ गया। गुरू की देव नगरी के अन्दर और उच्च रूहें संवर संवर कर आ उतरी। उन सब की उपस्थिति से यह पृथ्वी और भी सुसज्जित हो गई। देव नगरी रोशनी की लड़ियों की तरह चमचमाने लगी। श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्रद्धेय श्री कनल जी, श्रीमान सरमुख सिंह जी, श्रीमान मुरलीधर जी, श्री

बख्शी जी, परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी, कुहारवाला, हरनाम सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी, श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी आदि। इन फरिश्तों में से ज़्यादातर के दर्शनों ने मेरी श्रद्धा को सींचा है।

इन पाक हस्तियों के शुभ संग्राम के कारण देवगुरू जी की महा वचित्र शक्ति ने इस धरती पर पहली दफा मानव हृदयों पर नये क्रिश्मे किए। उच्च परिवर्तनों का प्रवाह जारी हो गया। परम पू० भगवान देवात्मा की जय के नगारे बजने लगे। गुरू की महिमा की धूमें पड़ने लगी। देव शक्ति ने नीच जीवन को गारत करने का और उच्च जीवन के पैदा करने का वह क्रिश्मा, वह कौतक, वह करामात कर दिखाई जो इस धरती ने या सारे मानव इतिहास ने कभी न देखी वा न कभी सुनी थी। डाकुओं के सरदार, सुच्चा सिंह जी बदल गए, उनका घर डाकुओं की पनाहगाह थी। वह शान्ति भवन बन गया। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज के तप ने परिवर्तनों का गुलज़ार पैदा कर दिया। बाहिया के सरदार हरनाम सिंह जी, जो महाराजों के रिश्तेदार थे बदल गए। डाक्टर श्री राम जी, दाता जी, फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी, गुरू रूतबे को त्यागने वाले भाई अतर सिंह जी, साधु जानकी दास जी, सरदार अनोख सिंह जी, मास्टर गुरबचन सिंह जी, मास्टर मुकन्द सिंह जी, श्रीमान मेवा सिंह जी, मास्टर हरीदास जी, तहसीलदार राम जी दास जी, लाला राम सुखदास जी, श्री बंसी लाल जी, सेठ राधा कृष्ण जी, जविन्द्र राम जी, श्री काका जी, श्रीमान देव बल जी, श्रीमती सुशीला देवी जी, श्रीमान धर्म रतन जी, श्रीमान धर्मानन्द जी, श्रीमान शादी लाल जी, श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी, बलवन्त राय जी धवन उक्त जनों के सुन्दर रूप को जब मैं देखता हूं कि वह एक एक व्यक्ति नहीं थे, एक क्षेत्र थे, तो मेरा दिल खुशी से झुक जाता है और दिल करता है कि मैं शैदाई सा हो जाऊं और घड़ियाल लेकर गली गली, कूचे कूचे, नाचता फिरूं और कहूं "पापियों के तारणे को देवात्मा जगत में आ गए।"

सारे उत्तरी भारत और लहौर, रावल पिंडीं, पेशावर कोयटा तक, बंबई कराची, सिंध तक समूहिक पंजाब, हरियाणा दिल्ली, यू.पी, बिहार तक देवत्व की फौजों की छावनियां थी। देव नगरी के हजारों की गिणती में वासी थे। वह कैसा कमाल सुनहरी युग था, कितना सुन्दर दृष्य था!! उस सब की याद के साथ हृदय नाच उठता है।

परम पू० भगवान 3 अप्रैल 1929 को देवलोक गमन कर गए। देव नगरी अनाथ हो गई। परन्तु गरू के प्यारों ने हौसला नहीं छोड़ा। दोगुणा बल धार कर जुटे रहे। 16 - 17 साल बराबर काम चलता रहा, आत्माओं में उच्च परिवर्तन आता रहा। देवत्व के सूरज की रोशनी फैलती रही। 1947 में पाकिस्तान बनने से बहुत बड़ा झटका लगा, परन्तु उस समय के योद्धाओं ने पीठ नहीं दिखाई। गुरू का बल पाकर बड़ा संग्राम किया। गुरू महाराज के जाने के बाद भी उनके अद्वितीय देव असरों का काम योग्यता अनुसार खूब होता रहा। बहुत सुन्दर परिवर्तन होते रहे। पंडित नेतराम जी, श्रीमान नौध सिंह जी, डाक्टर हरदियाल राय जी, कंवर दविन्द्र सिंह जी, श्रीमान मक्खन सिंह जी, डाक्टर इकबाल सिंह, श्रीमान रूपचंन्द जी, श्रीमान सुरजन सिंह जी, श्रीमान मनोहर लाल जी, श्रीमान बृजलाल जी, मोहन लाल जी डाबर, निर्भय नन्द जी, धर्मपाल जी शर्मा, यशपाल जी भल्ला, जैसे अनेकों जनों ने उच्च परिवर्तन पाकर गुरू की शरण को प्राप्त किया।

भाई साहिब भाई मोहन देव जी सिन्ध जगत

बसा गए। कनल जी को गुरू नगरी में दे गए। इस इलाके को माता सत्यवती जी सहिजवाला, मास्टर टहल राम जी, श्रीमान भावन सिंह जी सम्भालते रहे। स्वामी गोबिन्द राम जी ने अम्बाला, हरियाणा के श्रेत्र सम्भाला, श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जीने मंडी फूल, रामपुरा आदि सम्भाला फिर पटवारी जगत बनता गया, आगे उन्होंने विकासालय चलाया श्रीमान निर्मल सिंह जी कोहारवाला ने मालवा, भटिंडा, फिरोज़शाह, घलकलां, नाथेवाला, थराजवाला सिंन्ध तक समाज की हरियाली को फैलाया। श्री अकबरपुर यात्रा की नींव रखी। लाला मुरलीधर जी ने दिल्ली सम्भाली। कनल जी ने फिरोजपुर और श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने मोगा में डेरा लगा लिया।

यहां पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि के नौजवान लड़के लड़कियां को सुशिक्षित करते हुए उनके हृदयों पर देव समाज के काम की अमिट शाप छोड़ी। श्रीमान धर्म बल जी के बाद विकासालय चलाया। नये सुशिक्षित नौजवान, स्त्रियां, विधवाओं को कैसे सुधारा, सारा दृष्य बहुत मनमोहक था। श्रद्धेय कनल जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने वृद्ध अवस्था तक बहुत तप कमाया। सरदार सरमुख सिंह जी बहुत बज़ुरग हो गए, मेवा सिंह जी और श्री गुरुवन्त सिंह जी की सहायता के साथ 1967 तक घोर संग्राम किया। 1950 में भगवान की जन्मशताब्दी का जलूस, विकासालय की रौनक, महोत्सव के नज़ारे दिल्ली, अम्बाला, मोगा, फिरोज़पुर के स्कूलों कालिजों की देखरेख में उत्तमता, महोत्सवों और विकासालय के उत्सवों के दिलकश नज़ारे याद आते हैं। विकासालय की छत्त उसका विशाल सेहन और बरामदे, बुआएज स्कूल के कमरे, उनके आंगन उनके ग्राऊंड में साथी सेवकों की कतारों की कतारें चारपाईयों की लगी होती थी। उच्च नज़ारे पैदा होते थे। तारणहारे देवत्व के सूरज की रोशनी बांटने का काम होता था। रुहें सरशार होती थी। हर वर्ष 2 - 2 बार जलूस निकलते थे, लहौर, सोलन, श्री अकबरपुर को यात्राएं जाती थी, वह सब कुछ सामने आकर दिल नाच उठता है। पागल सा होने को मन करता है "पापियों के तारणे को देवात्मा जगत में आए" की गूंज गुंजाने को दिल मचल उठता है।

गुरु के हाथों से घड़े, शिंगारे, सपाहियों वा जरनैलों की फौज एक एक करके घटती गई, सन 1967 में केवल एक श्रीमान गुरुवन्त सिंह जी रह गए, जिन्हें गुरु चरणों की छू ने कोयले से हीरा बना दिया था। शिक्षा बेशक उनकी अधिक नहीं थी, परन्तु गुरु अमृत तक उनकी रसाई बहुत गहरी थी, जिससे वह पापी आत्माओं के बड़े-बड़े किले को फतह करने का जादू रखते थे। शोक कि उनकी उमर ने भी वफा न किया। वह 1970 में एक हादसे का शिकार हो गए। मुरु मिशन की कमर ही टूट गई, मिशन कमज़ोर होता गया, उजड़ता गया और बरबाद हो गया। रहती कसर पूरी हो गई, जब श्री धर्मवीर जी भी घातक रोग के हवाले हो बेवक्त चले गए। मिशन के बछड़ों के गलों में पंजाली पड़ गई, उनके अति कमज़ोर घुटने फिर गए और जल्दी ही वह भी निकम्मे हो गए और कुछ ही समय में वह कुछ और ही बन गए।

सारी फिज़ा बदल गई, जोरदार लहर बड़े बड़े महारथियों को सैलाब में कागज़ी किश्ती की तरह बहा ले जाती हैं। प्रभाव बदल गए, ख़्याल बदल गए, विचार बदल गए, भाव बदल गए, ख़्वाहिशें बदल गई, इच्छाएं बदल गई, मुल्य बदल गए, कदरें बदल गई, हां लक्ष्य ही बदलते चले गए, किरदार बदलते चले गए। हम तुच्छ और नालायक हो गए। हमारे दामन हमारी झोलीयां फट गई। देव प्रभावों तक गुरू के

अद्वितीय अमृत तक, देवत्व के सूरज की जादू भरी किरणों तक किसी की कोई रसाई नहीं रही, हम नंग और कंगाल हो गए। मिशन कंगाल हो गया।

जब विकासालय की सूनी पड़ी ईमारत को देखता हूं, जहां कबूतर बोलते हैं, उत्सवों, महोत्सवों की अति फीकी रौनक, कागज़ी फूलों की सुगन्धी रहित चमक, दमक को देखता हूं तो सारा नज़ारा, दिल डुबाने वाला, अति भयंकर, दिलों के टुकडे टुकडे करने वाला, फटे बादलों की सुनामी पीछे कदारनाथ के मन्दिर जैसा दिखाई देता है।

देव प्रभावों के बिना सब कुछ उजड़ रहा है। यदि देव प्रभाव होते, तो देवात्मा का मिशन बढ़ता जाता। विदेशों में फैलता, टी.वी., कम्पयूटरों पर देव धर्म का प्रचार होता, यदि देव प्रभाव होते तो एकता आती, सब बिखरे हुए न होते। सच्चे दिल से देव समाज को अर्पित जनों को निकाला न जाता, यदि देव प्रभाव होते तो कचहरियों कोर्टों में मुकदमों की भरमार न होती। जगह जगह एक दूसरे का भय न होता। पहरेदारों की अवश्यकता न होती। यदि देव प्रभाव होते तो अपने ही उपकारी बजुरगों को हथियार दिखाकर इस्तीफे न मांगे जाते। गले से पकड़कर धमकाए, डराए न जाते। ज़बरदस्ती इस्तीफे न लिए जाते। उसके पीछे जो कुछ हुआ, वह कभी न होता। यदि देव प्रभाव होते जाली, फोके सेवक न बनाए जाते, उन्हें जीवन स्तर जाने बिना पदों पर उन्नतियां नहीं की जाती। यदि देव प्रभाव होते, तो दान वा नियत दान देने की मनाही न होती। प्रार्थनाएं ठुकराई न जाती। यदि देव प्रभाव होते तो धरने की ज़रुरत न पड़ती।

यदि देव प्रभाव होते तो कर्मचारियों की कमी न होती। प्रचार पार्टियां न मिटती। आए दिन, महीनों वा सालों में उच्च परिवर्तन अवश्य होते, देव प्रभाव होते तो सच्चे हानि परिशोध होते, शोक और दुख की धाएं निकलती, क्षमा याचना और मुआफियों की धाराएं बहती। हानि प्राप्त अस्तित्वों के चरणों में नाक रगड़े जाते, हथियाए, लूट, घपले दुख और सूद समेत लुटाए जाते। देव प्रभाव होते तो देव समाज कौंसरज़ के विरूद्ध धन अपहरण की शिकायितें न होती। देव प्रभाव होते तो वह शिकायतें रफा दफा न होती। लोग त्याग करते, काम काज, नौकरियां छोड़ छोड़कर विकासालय में डेरा लगाते, प्रचार के लिए कर्मचारी वा प्रचारक पैदा होते। जहां ताप नहीं वहा आग नहीं, जहां कोई उच्च परिवर्तन नहीं, जहां देव प्रभाव नहीं वहां कोई धर्म कारज़ नहीं, वहां कोई धर्म समाज नहीं।

देव प्रभावों का नाम ही देव समाज है। धर्म समाज है मन्दिरों, भवनों का नाम, कमेटियों का नाम, स्कूलों, कालिजों का नाम, प्रबन्ध का नाम देव समाज नहीं, पदों का नाम, पदवियों का नाम देव धर्म नहीं, यह सहाय मात्र अंग हैं। जहां देव प्रभाव हैं वहां उच्च परिवर्तन है, जहां कोई उच्च जीवन नहीं, कोई धर्म कारज नहीं, कोई धर्म समाज नहीं।

हालात यह हैं, ठोस सच यह है, जैसी परिस्थितियां अब हैं कि हम सब नये, पुराने परन्तु सच्चे धर्म अभिलाषी केवल अपना सच्चा हित चाहने वाले सेवकों से यह मांग करती हैं, यह चुप करके बैठने का समय नहीं, एक दूसरे का मुंह ताकने का समय नहीं, समय की मांग है कि हम अपनी देव प्रभाव रहित कंगाली को, अपने नंगपने को देखें। गहरे दुख भरे विचार से देखें तो सोचें और गहरे दुख और फिकर से भरें, इन हालातों में हमारा क्या बनेगा? हमारे परिवारों और बच्चों का क्या बनेगा? पाप कर्मों की सुनामियों से, मिथ्या की भयानक ठोकरों, धक्कों से हमें कौन बचाएगा? केवल और केवल देवआत्मा, सत्य और शुभ

के सूरज के प्रभाव, केवल देव प्रभाव ही हमें बचा सकते हैं। उन्हें पाने का, उनकी प्राप्ति का कोई सच्चा उपाय, सच्चा संग्राम, सच्चा उधम करना पड़ेगा। *Self Help* करनी पड़ेगी। आत्म सहायता करनी पड़ेगी, जो देव प्रभावों की कमी को समझते हों, केवल और केवल उनके साथ अपने उक्त दुख को अपने उक्त भय को, अपने फिकर को सांझा करना पड़ेगा, परस्पर सहायता, परस्पर संग्राम और सच्चे त्याग के साथ, जगह जगह मिल बैठकर देव प्रभावों की प्राप्ति का सच्चा यत्न, सच्चा संग्राम करना पड़ेगा। कोई भी निरपक्ष धर्म सम्बन्धी, इसमें सहायक सिद्ध हो सकता हो, उसे आना पड़ेगा। परन्तु उच्च संगत, सच्ची संगत, देव प्रभाव दायक संगत जीवन परविर्तन कारी संगत, मिल मिलकर अपने अपने नीच जीवनों को देखने, अपनी उच्च भाव वहीनता को , अपनी आयोग्यता को समझने का और महसूस करने का, उच्च भावों की प्राप्ति का मिलजुल कर निरोल संग्राम और यत्न करना पड़ेगा। नहीं तो दुनियां के नीच असर हमें बर्बाद कर देंगे। हमारे लिए देवआत्मा का ज़हूर, उनकी उद्भुत शिक्षा, उनका मिशन निरर्थक ही हो जाऐंगे। एक हसीन ख़्वाव, एक सुन्दर स्वप्न रह जाएंगे। संसारिकता, नीचता और पश्चाताप के असरों का अन्धकार और आग हमें, हमारे बच्चों को धीरे धीरे हड़प कर जांएगे।

हर नगर, हर शहर के साथी सेवक, बार बार इकट्ठे हों, मिल मिलकर बैठे, जो अपने से जिस जिस पक्ष में बड़ा है, श्रद्धा में वा सेवा में, त्याग, अनुभव और साधनों में उसे बड़ा, अपने आपको छोटा जानकर सच्चे दिल से महसूस करके, उसके साथ मिलकर बैठें, गुरु महाराज की सुन्दर छवि का अर्चन करें, मिल बैठकर भजन गाएं, देव प्रभावों की प्राप्ति की सच्ची प्रार्थनाएं करें। गुरु की बानी का पाठ करें, गुरु की ज्योति शक्ति को पाकर जो महान परिवर्तन पहले हुए हैं, उनका प्रार्थना पूर्वक पाठ करें, अपनी कमीयां, अपने दोष जिन्होंने देखें हैं वह पत्र, पाठ, भक्ति पूर्वक करें, तब हमारी सहायता निश्चय है। हमें देव प्रभाव मिलने ज़रूरी हैं, हमारी रक्षा होनी आवश्यक है। हमारा भला होना आवश्यक है। यदि हमें, हमारे में से किसी को, अपनी कुछ नीचता, कोई गल्ती, कोई दोष, कोई अयोग्यता थोड़ी बहुत ही दिखने लग पड़ी तो समझो के हमारी सच्ची संगत होनी आरम्भ हो गई। जो अपनी नीचता देख सकेगा, वह उससे बचने के संग्राम में पड़ जाएगा। वह स्वंय भी बचेगा, किसी और को भी बचाने में सहायक होगा।

गुरु के ग्रन्थ, गुरू के लेख, गुरू की बाणी, देव प्रभावों को पा पाकर हुए बेशुमार पुराने उच्च परिवर्तन अपनी नीचता को देख देखकर, लिखे हुए लेख और पत्र, सब देव प्रभावों से लबालब भरे हुए हैं, दीनता से, श्रद्धा से अपनी नीचता को देखकर उपजी, हीनता और नम्रता के साथ की हुई प्रार्थनाओं के साथ गुण चिन्तन, उपकार स्मरण और अपराध स्मरण के सच्चे साधनों के साथ, उन देव प्रभावों भरे खज़ानों तक हमारी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार रसाई होनी अवश्यक है। हमें मिलमिल कर यह यत्न करना अवश्यक है, इसके बिना कोई चारा नहीं।

आओ! घर घर पहुंचे, सच्चे धर्म अभिलाषी साथी सेवकों को जा जाकर मिलें। अपनी अपनी कंगालता के लिए भय वा दुख होना बांटें। मेरा तो बार बार यह दिल करता है, मैं शैदाई सा हो जाऊं साथी सेवकों, के गली कूचों, दरों वा दरवाजों पर जाकर यही अलख जगाऊं "हम पापियों के, तारण हार देवात्मा जगत में आया, हम पापियों को तारने" आओ, मिलकर बचें।

बलदेव सिंह

आत्मिक उच्च परिवर्तन का काम सबसे बढ़िया काम है

मैं तुम लोगों को अपने दिल की एक तकलीफ का हाल बताना चाहता हूं और वह यह जानने के लिए बताना चाहता हूं कि क्या उसका असर किसी और पर होता है या नहीं, यदि होता है तो किस पर और कहां तक?

देव समाज में जो लोग आए हैं, उनके आत्माओं के कुछ न कुछ उच्च परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन किसी में कम और किसी में अधिक। यदि ऐसा उच्च परिवर्तन कुछ भी न हुआ होता, तो वह यहां न होते। अब यह प्रश्न है कि इस प्रकार का जो उच्च परिवर्तन आया है, क्या वह तुम्हें अच्छा मालूम होता है? यदि वह उच्च परिवर्तन अच्छा मालूम होता हो और यह दिखाई देता हो कि किसी जन में ऐसा उच्च परिवर्तन आना बहुत बड़े सौभाग्य की बात है, तो फिर आत्मिक उच्च परिवर्तन का जो काम है, क्या वह काम सबसे बढ़ कर उच्च और सौभाग्य का काम नही है? यद्यपि श्रेष्ठ काम और भी बहुत हैं: किसी भूखे को खाना देना, किसी नंगे को वस्त्र देना और किसी बीमार का इलाज करना, परन्तु क्या किसी ऐसे अच्छे काम से आत्मा में कोई उच्च परिवर्तन आ जाता है? हरगिज़ नहीं। किसी को लिखाने, पढ़ाने, किसी को भोजन खिला देने आदि से दिल तबदील नहीं होता। शारीरिक और दिमाग़ी सेवा के काम अपने तौर पर अच्छे काम हैं परन्तु इससे किसी के आत्मा में सत्य मोक्ष और विकाश का कोई कार्य नहीं होता। अब यदि यह बात किसी की समझ में आ जाए कि आत्मिक उच्च परिवर्तन का काम ही सबसे बढ़िया काम है, तो फिर यह बात भी समझ में आ सकती है कि ऐसे काम में भागी बनने का जिन जनों को सौभाग्य प्राप्त है, उनकी ज़िम्मेवारी भी सबसे बढ़िया ज़िम्मेवारी है। मैं इस काम के संबंध में और जो इस काम को करने वाले कहलाते हैं, उनके संबंध में बहुत फिकर और तकलीफ में रहता हूं। जो जन अनुराग से भरा हुआ है, उस के लिए अपनी असल अवस्था को देखना बड़ा कठिन है। इसलिए ऐसा जन देवात्मा के संबंध में सच्ची पूजा का साधन नहीं कर सकता और ऐसा साधन न करने के कारण आत्मिक अंध कार में रहता है। फिर जो खुद ही आत्म अंध कार में हो, वह दूसरों के आत्म अंधकार को किस प्रकार से दूर कर सकता है और ऐसा साध न न करने के कारण आत्मिक अंधकार में रहता है। फिर जो खुद ही आत्म अंधकार में हो, वह दूसरों के आत्म अंधकार को किस प्रकार से दूर कर सकता है और ऐसे जनों के द्वारा जो अत्मिक उच्च परिवर्तन का काम होता हो, वह सन्तोषजनक किस प्रकार हो सकता है? नहीं हो सकता।

जो जन आत्मिक उच्च परिर्तवन के

कार्य में लगे हुए हैं, क्या उस कार्य के लिए उन के हृदयों में कोई लगाव है? यदि है तो उस का क्या प्रमाण? यदि किसी में इस प्रकार का कोई लगाव हो, तो वह उस की गतियों से प्रकट होगा। यह थोड़ा ही होता है कि किसी को प्यास लगी हुई हो और उसका पता न लगे? मैं जब महकमा रेलवे में नौकर था, तब एक बार ऊंट पर सवार होकर कहीं जा रहा था। रास्ते में पीने को पानी न मिला। प्यास बहुत लगी हुई थी। मैंने अपने साथी को कहा कि गला सुख रहा है परन्तु सूझता कुछ न था। आखिरकार ऊंट को भगाना आरम्भ किया। जब मैं पड़ाव पर पहुचा तब बेहोश हो गया, पानी पीने के अनन्तर कुछ होश आई। इससे तुम्हारे सामने यह सचाई साफ़ तौर पर खुल सकती है कि जिस चीज की किसी के भीतर भूख और प्यास होती है, वह यदि न मिले, तो उसमें बेचैनी अवश्य पैदा होगी।

मेरे पास तो कोई नहीं आता जिससे यह पता लगे कि उसमें अन्य आत्माओं में उच्च परितर्वन लाने की व्याकुलता है। ऐसे किसी भाव की कोई चर्चा तक नहीं होती। यदि सचमुच तुम्हारे भीतर अन्य आत्माओं के भले का भाव हो, तो जहां कहीं तुम्हें अन्य आत्माओं की हानि होती दिखाई दे, उन की तुम मेरे पास चर्चा करके उस हानि को रोकने के लिए कोई सहायता चाहते दिखाई दो। जहां कहीं कुछ बेहतरी का क्रम आरम्भ हो, तुम उसका हाल सुनाकर और अधिक बेहतरी के लिए सहायता मांगो। आत्मिक परिवर्तन विभाग में जो लोग काम करते हैं, जब तक मुझे उनके अपने आत्माओं के उच्च परिवर्तन का पता नहीं लगता, तब तक वह औरों में क्या उच्च परिवर्तन ले आंएगे? उनके सामने कितने आत्मा नीचे को जा रहे हैं, परन्तु उनके दिल पर कोई चोट नहीं लगती, उन्हें कुछ फिकर नहीं होता। ज़िदगी का यह अटल नियम है कि यदि कोई जन उच्च भावों से औरों की सेवा करता है, तो इससे वह आप भी उच्च बन जाता है। यदि कोई जन आपत्ति समझ कर औरों की सेवा करता है, तो उससे उसका आत्मा नीचे चला जाता है। तुम विचारो कि तुम आत्मिक परिवर्तन विभाग में किन भावों से सेवा करते हो? अपना सौभाग्य जानकर और केवल उच्च भावों से या उसे मुसीबत की चीज़ जान कर? जिन भावों से तुम वह काम करते हो, उन्हीं के अनुसार तुम्हारे जीवन में उच्च व नीच परिवर्तन आएगा। तब नितान्त आवश्यकता है कि तुम किसी प्रकार से आत्मिक उच्च परिवर्तन के काम को न केवल सबसे बढ़िया काम जान सको, बल्कि उस श्रेष्ठ काम में सेवाकरी बनना अपना बहुत बड़ा सौभाग्य और उच्च अधिकार बोध करो और उस काम के लिए जिन उच्च भावों को अपने भीतर उन्नत करने की आवश्यकता है, उन्हें उन्नत करके सच्चे प्रचारक बन सको और इस पहलू में मेरा जो फिकर और दु:ख है, उसे हलका कर सको।

भगवान देवात्मा की बाणी

गुरू असरों का शाहकार

मानवता के महा सौभाग्य कि नेचर ने अपने विकास क्रम में उत्तरी भारत में ऐसे महा अद्भुत परम शरोमणी इन्सान को प्रगट कर दिया कि जो अपनी मनोविज्ञानिक अनोखी निधि के कारण समूह मानवता से अनोखी और पूर्ण अद्भुत समर्थ्य रखते हैं। मेरी मुराद परम पू० भगवन देवात्मा से है। जिनके शुभ अनुराग और सत्य अनुराग, लासानी, जिनकी ज्योति और तेज लासानी। जिनकी शिक्षा लासानी और जिनका मानव हृदयों पर कारज और कौओं से हंस बनाने का लक्ष्य लासानी था, और है। केवल परम पू० भगवान देवात्मा ने अपनी अद्वितीय ज्योति के भीतर मानव रुहों को मिथ्या धर्मों के भ्रम वा भुलेखों ओर वहमों के अन्धेरे सागर और महा भयानक पापों, जुल्मों, अपराधों के घोर दुखों के सागर में गोते खाते हुए, डूबते, बर्बाद होते और मरते हुए देखा, तब उन्होंने अपना जीवन लक्ष्य ही, मरती हुई रुहों को बचाने की खातिर इस लासानी पाक संग्राम में अपना आप झोंक दिया। उन्होंने देव जीवन की करामाती तासीरों ने बिल्कुल एक निराला मानव इतिहास रच दिया। बड़े बड़े पापी जीवन बदलने आरम्भ कर दिए। नीच मनुष्यों को उच्च बना दिया, चोरों, ठगों, डाकूओं, कातिलों और व्यभिचारियों को नेक बना दिया। उन्होंने भले कामों में लगाकर उनके जन्म सुधार दिए।

श्रीमान रुपचन्द जी का जन्म बहुत अच्छे परिवार के सिंगल गोत्र के श्री रौनक राम जी के घर 20 दिसम्बर सन 1920 को, मोगा, तहसील के गांव समाध भाई में हुआ। उनके पिता श्री उस समय में अच्छे पढ़े लिखे इन्सान थे। उन्होंने रुड़की के प्रसिद्ध थामसन इंजनियरिंग कालिज से इंजनियरिंग पास की थी। श्रीमान रुपचन्द जी के पहले छः भाई पैदा हुए, जो एक एक करके स्वर्गवास हो गए। वह और उनके एक भाई बचे थे। इसलिए उनकी परवरिश बड़े लाड प्यार से हुई। उनकी सब मनमर्जियां पूरी होती रहीं। लगता है कि बहुत लाड़ प्यार में वह मनमौजी बनते गए। उन्होंने अपनी पढ़ाई लिखाई में पूरा ध्यान न दिया। बुरी संगत में पड़कर बुरी आदतों में मस्त हो गए। पढ़ाई में केवल दसवीं तक ही पढ़ सके। उनके अपने कहने के अनुसार वह "आठ अैब शरई" बन गए। शराब, सिगरेट और नशे पीने, मांसाहार करने, मन्द कर्मी, जूए आदि के व्यसनों के शिकार बन गए। इन बुरी आदतों ने बुरी तरह बर्बाद हो रहे थे। उनकी मोगा के एक नेक घराने अंदर बड़ी ही नेक और सुन्दर लड़की से शादी हो चुकी थी। बच्चे भी हो चुके थे। परन्तु वह नीच सुखों की चाट में बुरी तरह लिप्त हो चुके थे

वह स्वयं बताया करते थे कि 1940-42 के जमाने में पिता जी ने 5 हज़ार कैश उनको दिया। ताकि उससे वह कोई कारोबार करें, परन्तु उन्होंने थोड़े दिनों के भीतर वह सारा रुपया नशे पीने और जूआ खेलने में गंवा दिया।

अबोधी और अंहकारी इतने थे, उन्होंने एक बार सिगरेट पीकर धूआं अपनी माता के मुंह पर सीधा मारा, उससे उनकी माता इतनी परेशान हो गई और कहा कि "जहां मेरे छः पुत्र मर गए थे, वहां तू भी मर गया होता, तो मुझे इस प्रकार तो न तड़पाता"।

अभी उनकी शादी नहीं हुई थी, सगाई हुई

थी। वह उस समय मुश्किल से 19 वर्ष के थे, उन्होंने शराब पी हुई थी, अपनी जुंडली के साथ मोगा में सिनेमा देखने चले गए, वहां वह शोर गुल करने लगे। एक पुलिस वाले के मना करने पर उन्होंने पुलिस वाले की ही पिटाई कर दी। पुलिस वाले ने उन्हें और पुलिस वालों को बुलाकर थाने ले गए। वहां अपमान और निरादर का सामना करना पड़ा। पूछने पर कि "क्या तुम्हें कोई यहां जानता है"? तब ससुराल वालों का नाम बताना पड़ा, उन्होंने आकर छुडाया।

पाकिस्तान बनने के समय भी वह गुंडो की टोली के साथ चल पड़ते, तीर उठाए फिरते, एक सुनसान पड़ी मसीत के अन्दर से उन्हें तेल का बड़ा मट्ट मिला, वह उस चोरी करके घर ले गए। वह उनका सौभाग्य कि उन्हीं दिनों समाध भाई में डाक्टर इकबाल सिंह जी के पास देव समाज के कर्मचारी, आया करते थे। वहां विशेष सत्संग होती थी। डाक्टर इकबाल सिंह जी स्वयं बुराईयों से बच चुके थे। वह और नौजवानों को भी इस अमृत के चश्में के साथ जोड़कर उन्हें बचाने का पुरज़ोर संग्राम करते थे। उनकी नेक कोशिशों के कारण श्रीमान रुप चंन्द जी के भाग खुलने का अवसर मिल गया। वह देव समाज की नायाब संगत में आकर लाभ उठाने लगे। भगवान देवात्मा के असरों ने श्रीमान रुप चन्द जी पर जादू का असर किया। उनका जीवन नया ही रंग पकड़ता गया। वह सारे मोटे पापों को छोड़कर, मिथ्या दुनियवी धर्मों को तिलांजली देकर, देव समाज की अनोखी सोसाईटी के सेवक सज गए। उनके जीवन में बहुत ही सुन्दर परिवर्तन आ गया। रुप चन्द जी को अनोखा सचाई और भलाई का रुप चढ़ता गया। उनका वजूद अपने आप एक खास जीवन बनता गया। उनको देव समाज का कारज इतना अकर्षित करने लगा, उन्होंने सारी दुनियादारी के चक्करों को छोड़कर, सभाधी भाई से अपना सारा साजो समान उठाकर देव समाज धर्म विकासालय में डेरा लगा लिया और परिवार सहित विकासालय के साथ मकान में रहने लगे। रुप चन्द जी धर्म विकासालय में रहकर जहां स्वयं लाभ उठाते वहां सेवा के कामों में लग गए। बच्चे देव समाज स्कूलों में शिक्षा पाने लगे। इस प्रकार सब काम धन्धे छोड़कर देव समाज की सेवा में रत हो गए।

उनकी उर्दू की लिखाई छापे की तरह बहुत सुन्दर थी। उन्होंने देव समाज के उर्दू अखबार की किताबत (लिखने) का काम बहुत अच्छी तरह सम्भाल लिया। उर्दू पत्रिका हर हफ्ते प्रकाशित होती थी। पहले उसको लिखना, फिर उसके प्रूफ ठीक करने, फिर फिरोज़पुर या लुधियाना से छपवा कर लाना पड़ता था। कई वर्षों तक यह सेवा का काम उन्होंने खुशी खुशी निभाया।

सुबह, शाम संगत से लाभ उठाते, बाहर सत्संगों के साथ जाते, इस प्रकार उनके भीतर उच्च भावों के अंकुर फूटने लगे। उनके आत्मा का रुप सुन्दर होता गया।

सफाई, पौधों की सेवा, रंग, रोगन, मिस्त्रियों से काम लेना आदि सेवा के काम वह बहुत शौक के साथ करके अपना भला करते।

एक बस चलाते, लहौर यात्रा पर ले गए, वैन, ट्रक, जीप चलाने की भी सेवा करते।

वह सत्संग से स्वयं फायदा उठाते और जनों वा सम्बन्धियों को भी सत्संग में लाते। बदकिस्मती से उन्हीं दिनो उनके बड़े भाई की जवानी में अकस्मात मौत हो गई। उनके परिवार का बोझ भी उन्होंने अपने

सिर पर ले लिया। इस कारण उन्हें ठेकेदारी का काम करना पड़ा, परन्तु समाज के साथ उनका सम्बन्ध गहरे से गहरा होता गया। समाज से जुड़े रहकर सेवा के विशेष अवसर के लिए तैय्यार करके अपना भला करते रहे। समाज की संगत से वह विशेष व्यक्तित्व के रुप में उभरे। कई अंगों में उनका जीवन प्रभावशाली बन गया। समाज के 4 'स' खूब अपना लिए। सत्संग, सेवा, साधन और स्वैअध्ययन का पक्का पाठ पढ़ लिया। वह ठोस, सच्चे, ईमानदार, सेवाकारी, पुरषार्थी, और भले इन्सान बन गए।

गुरु के जादू भरे असरों ने आपके जीवन को एक नये सुन्दर सांचे में ढाल दिया। आपके सम्बन्धों में कमाल का निखार आ गया। भले मनुष्य की पहचान उसके आचार, व्यवहार से होती है। वह कैसा सम्बन्धी बनता है। श्रीमान जी एक बहुत अच्छे पिता, बहुत अच्छी सन्तान, बहुत अच्छे पति और बहुत ही अच्छे भाई और ईमानदान ठेकेदार बन गए। उन्होंने अपने बेटों को बहुत प्यार दिया। सबको पापाचार, विशेषकर नशे, मांसाहार वा बेईमानी से बचाया। अपने मंझले बेटे विजय से शराब छुड़ाई, यह कहकर बेटा मेरी बांह काट ले, आंख ले ले, परन्तु इस भयानक आग जैसी आदत को छोड़ दे। सब को उनकी इच्छा के अनुसार उच्च शिक्षा दिलवाई सब को देव समाज के रक्षाकारी किले से जोड़ा और अपने पैरों पर खड़ा किया।

वह बहुत ही नेक पति बन गए। पत्नी का खुलकर दिल से गुणगान करते। अपनी अविज्ञाओं वा ग़ल्तियों के लिए दिल से क्षमा याचना करते, उनको सच्चा सत्कार देते। पत्नी के परलोक गमन करने पर बड़ा सदमा खाया, बहुत दुखी रहे। उनके निमित्त पुण्य दान किया। उनका आप जीवन चरित्र लिखा और लोगों में बांटा। कितने पति अपनी पत्नियों के जीवन चरित्र लिखते, छपवाते हैं, ऐसे बहुत कम होते हैं।

अपने आपको एक नेक और आज्ञाकारी पुत्र सिद्ध किया। अपने माता पिता का खूब सत्कार और सेवा की। वह बहुत दुखी होते थे, जब आखिर में माता ने खाना छोड़ दिया तो मैं खाना क्यों खाता रहा। मैं भी रोटी खाना छोड़ देता तो मां ज़रुर खाने लग जाती। डाक्टर के पास फरियाद करते कि डाक्टर साहिब मेरे पास जो कुछ भी है, वह ले लो, पर मेरी मां को बचा लो।

आप कई अंगों में अच्छे भाई ही नहीं थे, बल्कि एक अदर्श भाई थे। आपने अपनी भावजा का पूरा सत्कार किया। उनका किसी की ओर से अपमान वह सहन नहीं करते थे। बल्कि उसकी अच्छी तरह ख़बर लेते थे। उन्होंने अपने 8 बच्चों के साथ अपने चार पांच भतीजे भतीजीयों को बराबर का प्यार, दुलार, सेवा, शिक्षा, शादियां करके उन्हें रता भर भी महसूस नहीं होने दिया कि उनके बाप नहीं है। वह आखिर तक उन्हें प्यार करते रहे, किसी को बेग़ाना नहीं समझते थे। इस भावना में उनकी नेक धर्म पत्नी जी ने भी उनका बराबर का साथ दिया। काश! सब भाई श्रीमान जी जैसे भाई बन जाते तो दुनियां का कोढ़ ही ख़त्म हो जाता। यह गुण उनके बेटों में भी विरासत में आया है। एक सरकारी अफसर भाई से जीप चलाते एक आदमी नीचे आ गया, तो झट बड़े भाई ने अपने आपको पेश कर दिया ताकि भाई की नौकरी पर कोई हरफ़ न आए।

आपके सपुत्र भी माता पिता का बड़ा मान सत्कार करते थे। मां बाप की इच्छा अधिक से अधिक पूरी करने का यत्न करते। मां को खिलाकर

खुशी महसूस करते। नये बूट सूट देकर खुशी अनुभव करते। श्रीमान जी कई अवसरों पर बेइख़्तियार कहा करते थे कि यदि स्वर्ग देखना है तो मेरे घर में जाकर देखो। वाह! यह थी गुरु अमृत की नेयमतें!

श्रीमान जी का जीवन खरा और ईमानदार बन गया था। वह कारोबार में भी पूरे ईमानदार बन गए थे। एक बार उनके रिश्तेदारों ने सरकारी सीमेंट उनसे चोरी बेच दिया, आखिर हिसाब किताब के समय उनको पता लगा। उन्होंने अपने हिस्से के 7 - 8 हज़ार रु० अदा किए। मैं उस समय समाज का सैक्रटरी था, उन्होंने वह रु० मुझे लाकर दे दिए कि यह सरकार को जमा करवा दो। कुछ लिखित जानकारी लेने से पता लगा कि इससे श्रीमान जी को कैद भी हो सकती है, श्रीमान जी ने कहा कि इससे श्रीमान जी को कैद भी हो कसती है, श्रीमान जी ने कहा कि बेशक मुझे कैद भी करवा दो परन्तु यह पाप की कमाई वापिस कर दो। कोई रास्ता न देखकर वह रु० भले कामों में लगा दिए। श्रीमान जी ठेकेदारी में झूठे बिल कभी बनाने नहीं देते थे। उनकी ईमानदारी की छाप सारे महकमें वा अफसरों में बैठ गई थी। सब उनका बड़ा सत्कार करते थे। और उन्हें पिता जी ही कहकर बुलाते थे।

उनके छोटे सपुत्र सीमेंट इंडिया के बड़े अफसर थे। वह वैगनों की वैगने सीमिंट अलाट करते थे। यदि 1 रु० फी बोरी भी वसूल करना चाहते तो लोग खुशी खुशी उन्हें दे देते। पर उस बेटे ने पिता की इच्छा का पालन किया। पिता उन्हें बार बार यह चेतावनी देते रहते थे कि बेटा, यशपाल मुझे तेरे मरने का इतना दुख नहीं होगा, जितना तेरे एक रु० भी रिश्वत लेने से होगा। वाह! धन्य है गुरू महाराज और उनके अद्वितीय असर जो एक एक अधिकारी जन को ऐसा ईमानदार बना देते हैं।

श्रीमान रूप चन्द जी के भीतर अपने गुरू के लिए अडोल श्रद्धा विकसित हो गई थी। उनकी श्रद्धा ने उन्हें गुरू दर की सेवाओं का स्त्रोत बना दिया था। उन्होंने सभी गुरू धामों पर बहुपक्षिए सेवाएं करके अपनी पाक श्रद्धा को तृप्त किया।

उन्होंने श्री अकबरपुर, सोलन, मोगा, चण्डीगढ़ और गुडगावों के स्थानों पर समय समय पर ठहिरकर उन स्थानों की रक्षा के ईलावा भांति भांति की सेवा करके अपना सच्चा हित किया। सब स्थानों की सेवा, सफाई, मुरम्मत, रंग रोगन बिलडिंग बनाना आदि बहुत से काम अपने हाथों से किए और अपनी निगरानी के साथ करवाए। विशेष कर सोलन में जिस प्रीती के साथ वह समाधी की सेवा किया करते, मकानों की मुरम्मत और हिफाज़त करते, पौधों आदि की, सेहन की सेवा करते, वह देखने वाला नज़ारा होता था। मोगे में विशेष कर महोत्सवों के समय ढेरों सेवा की, सेवा करते हुए मजदूर बन जाते थे। सोलन के पर्वत आश्रम के पवित्र स्थान से एक नलायक और अनाधिकारी नकली सेवादार से पीछा छुड़ाने के लिए उन्होंने अपने पास से 25 - 30 हज़ार या इससे भी अधिक रुपये खर्च करके पाक खुशी प्राप्त की। ऐसा कुछ और सेवक ने नहीं किया।

आपने गुरू मिशन की धन द्वारा बहुत सेवा की। आपने बार बार अच्छी रक्में लाखों रु० में देकर अपने आपको धन्य समझा। पब्लिक से, अपने बेटे, बेटियों वा अन्य सम्बन्धियों, दामादों से भी लाखों रु० दान में लेकर दिए। जगह जगह पर धर्म सम्बन्धियों को साथ ले जाकर, स्वयं अपने ट्रक चलाकर दान मांगकर सच्ची खुशी प्राप्त करते।

और वस्तुएं भी गुरू घर को देकर खुशी प्राप्त

करते थे। आपने दर्जनों बिस्तरे, और कई दर्जनों चारपाईयां मिशन के लिए बनाकर दी। जो चीज़ उनके मिशन में काम आती, वह देकर वह बहुत खुशी प्राप्त करते थे। मन्दिर के लिए कई हज़ार ईटें दान में लेकर दी। एक मन्दिर की चारदिवारी के लिए उन्होंने बड़ी टायले लेकर दी। जहां उसारी या टीप वा मुरम्मत का मन्दिरों का काम होता, वह अपने हाथ से करते व करवा कर सच्ची खुशी के वारिस बनते। कल्याण मन्दिर में उन्होंने कई बार रंग रोगन करवाया। सेवा द्वारा उन्हें रस वा सुख मिलता था। सेवा का अधिकार छिन जाने पर उन्हें गहरा सदमा लगता।

देव गुरू का सेवक होना वह अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानते थे। इस लिए वह पूरी सिद्क दिली से अपनी सारी प्रतिज्ञाओं पर पूरी उमर कड़ा पहरा देते रहे। जिन्दा, कारगर सेवक थे। उनका साफ, ईमानदार और सेवाकारी जीवन दूसरों पर अपना ठोस प्रभाव डालता था। उन्होंने अपने बेटे बेटियों, भतीजे भतीजियों और पोते पोतियों तक को सेवक बनाया और उनके ऊपर भी सेवक बनने का सौभाग्य रोशन किया। उन्होंने कोई 75 - 100 तक सेवक बनाएं होंगे। उन्होंने अपने ठोस जीवन के साथ अपने महकमें के अफसर बाबू मेहर सिंह जी एस.डी.ओ. को बहुत ही नेक और ईमानदार सेवक बना दिया था। उनका जीवन प्रचार करता था। शायद ही उन्होंने अपने सम्बन्धी वा वाकिफकार को सेवक बनने से रहने दिया हो। वह सेवकी के महान रुतबे को प्रगट करते बेबाक कहा करते थे कि समाज के साथ कभी भी आख़री कड़ी न रहो, अपने ही तरह और अधिकारी लोगों को ऐसे निराले सत्गुरू के साथ जोड़ो।

वह सच्चे और ख़रे व्यक्तित्व के मालिक थे वह बनियां बिरादरी में से होकर कभी अपने बेटे, भतीजे, पोते की शादी के लिए कोई मांग नहीं रखी। उल्टा ऐसा करना अपना घोर अपमान समझते थे। जहां तक उनकी पेश चलती थी वह लेन देन करने वाले के साथ रिश्ता जोड़ने की चाह नहीं रखते थे। वह जातिपाति के थोथे वा अदना बंधन से मुक्त थे। उन्होंने अपनी बी.ऐ, बी. ऐड, बहुत ही सुशील पुत्री की शादी सैनी बिरादरी के फौजी अफसर से करके कमाल दर्जे की बहादुरी का परिचय दिया। ऐसा कोई सच्चा सूरमा ही कर सकता है।

देव समाज के ग्रन्थों का अध्ययन उनकी श्रद्धा की खुराक थी। वह एक ही बैठक में घण्टों तक ग्रन्थों का पाठ करते रहते थे। उन्होने ग्रन्थों का बड़ा ही मन्थन किया। उन्होंने स्वंय समाज की कई किताबें आप छपवाई थी, हज़ारों रु० खर्च किए। सैंकड़ों पुस्तकें मुफ्त पोस्ट की। सब सेवकों को भेजते रहे। उन ग्रन्थों में से उनका निचोड़ देव बाणी खोज कर, देवत्व किरणों के 5 भाग उन्होंने छपवाए। सब पुस्तकों का खर्च अपनी तरफ या अपने ही रसूख से प्राप्त करके दिया। साधन शील जनों के लिए यह उनकी विशेष वा बहुमुल्य और हितकर सेवा है। सच्चे साधक सदा उनकी इस सेवा के लिए हृदय की तह से धन्यवाद देते रहेंगे। उनका उर्दू का लिखना खूबसूरत ही इतना था कि जिसको देख छपवाई का भुलेखा पड़ता था, उन्होंने खुशी 2 उर्दू के ग्रन्थ लिखे। मुझ अकेले को ही उन्होंने दर्जनो के करीब पुस्तकें उर्दू लिपि में लिखकर दी। यह तकरीबन 625 सफे होंगे। मैं दिल की तह से उनको धन्यवाद देता हूं, उसे मेरा बड़ा भला हुआ है।

वह गुरू महाराज की पैदा की हुई निराली और जिंदा सत्संग के साथ, तन मन से जुड़े रहने के लिए अपने भीतर जोरदार आकर्षण रखते थे, अपने बच्चों को ताड़ना देकर कहते रहते थे, यदि सत्संग से गाफिल हो गए, उदासीन हो गए, याद रखो सर्वनाश हो जाएगा।

समाज की, गुरू मिशन की निरोल हानि को देखकर उनको, उनकी ठोस श्रद्धा बिन पानी मछली की तरह तड़पा देती थी। वह अपनी जान की कुर्बानी देकर भी इस हानि से रक्षा करने के लिए लिलायत हो जाते थे। समाज के 125 वर्षों के इतिहास के भीतर उनकी इस बेकरारी, तड़पन, बेचैनी और परेशानी की अपनी ही मिसाल है, जिसने उन्हे गुरू मिशन के आगे धरने दिलवाए, भूख हड़तालें करवाई, पुलिस के हवाले हुए, धक्के और निरादर सहे, बेशुमार पत्र लिखे। ऐसी तड़पन, ऐसा दुख, ऐसा घाटा वा सदमा किसी और को महसूस हुआ हो, देखने को नहीं मिला। प्रधान मन्त्री के नाम 60 के करीब फरियादें लिखी। उनकी इस पाक तड़पना के सामने बड़े बडों के सिर शर्मसारी के साथ झुक जाते हैं। यह समूचा कांड ही इस समय की अद्वितीय समाज की शर्मनाक और अति दर्दनाक, मुर्दा दिली की मुंह बोली कहानी को ही दरशा रहा है।

श्रीमान रूपचन्दं जी का सच्चा, खरा, श्रद्धावान व्यक्तित्व, वह गुरू चरणों के साथ जुड़कर अपनी योग्यता के अनुसार अपना जन्म सफल कर गए। ऐसे वीर आत्मा को छत:छत: प्रणाम है।

श्रीमान रुप चंन्द जी 50 वर्ष की उमर के बाद जब उन्हें खाली समय मिलने लगा, वह बड़े ही अध्ययन शील बन गए, अपना निज का साधन करने वाले साधन शील बन गए। वह 25 सालों के लगभग अपनी कमियों के देखने वा लिखने का कड़ा साधन करते रहे। उन्होने काफी देर तक नमक खाना भी छोड़े रखा वह आख़री समय तक सोने से पहले देव स्तोत्र वा देव आरती का गान करते और इससे विशेष तृप्ति पाते थे। आज के समय में कोई ही माई का लाल अपनी कमियां हररोज़ लिखने का साधन करने का सोचता भी हो। वह प्रचार पार्टियों के साथ जाते और अपने जीवन में आए परिवर्तन को शुद्ध भावों के साथ सभाओं में ब्यान करते, जिसके बहुत ही उच्च असर अधिकारी जन अनुभव करते रहे। उनका जाना समाज के लिए बहुत बड़ा घाटा है। ऐसे उच्च परिवर्तन अब देखने को नहीं मिलते।

बलदेव सिंह

अन्मोल वचन

* केवल कायर व्यक्ति ही चिन्ता से ग्रस्त होते हैं। साहसी और वीर व्यक्ति तो समस्याओं की चिन्ता करने की बजाय उनसे संघर्ष करते हैं। भले ही दुखों का पहाड़ टूट पड़े, अगर साहस के साथ उनका मुकाबला किया जाय तो दुखों के पहाड़ उड़ जाते हैं।
* घृणा करना शैतान का काम है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है।

बरसी की सभा

28 अप्रैल को माननिय डा० इकबाल सिंह जी के बेटों ने अपने फार्म हाऊस जो आपने अभी 4 एकड़ में बनाया है, अपने माता पिता को श्रद्धांजली देने के लिए एक सभा का आयोजन किया, जिसमें 50-60 के लगभग नज़दीकी सम्बन्धी वा सब बहन भाई आकर शामिल हुए। इस सभा का आयोजन माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने किया। सर्वप्रथम बहुत सुन्दर हार के द्वारा परम पू० भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया और उसके बाद सब उपस्थित जनों ने श्रद्धा के फूल भेंट किए।

सर्वप्रथम जगदीष जी, जो विशेष रूप से इस सभा में शामिल होने के लिए आए थे, उन्होंने माता पिता के सम्बन्ध में बहुत अच्छे भावों से भरकर एक संगीत का गान किया। जिससे वातावरण बहुत भाव पूर्ण हो गया।

फिर सभापति जी ने फरमाया कि किसी परिवार का बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मृत्यु के बाद भी अपने माता पिता को याद करके श्रद्धांजली दी जाए। परिवार को मुबारक बाद दी कि जिस प्रकार माता पिता की फोटो के आगे फूल रखकर रोज़ सन्मान देते हैं, यह बहुत सराहनिय है, दूसरा दोनों भाई अपने परिवारों के साथ आज तक समेल के साथ इकट्ठे रह रहे हैं सुरिन्द्र के बच्चे सरल को उससे भी ज़्यादा प्यार करते हैं, यह बहुत सुन्दर उदाहरण है। उसके बाद सभापति जी ने कृतज्ञता की परिभाषा बताई कि किसी से उपकार पाकर याद रखना, उसे अपनी छाती पर बोझ की न्याई अनुभव करना, उस बोझ को उतारने के लिए व्याकुल होना और उपकारियों के लिए क्रियात्मिक रूप से कुछ करना कृतज्ञता कहलाती है। सारा ब्यान बहुत भावपूर्ण वा ज्ञानपूर्ण था। उसके बाद सब बहनों ने मिलकर "माता पिता की सेवा महसूस कर रही हूं" नामक भजन का गान किया। उसके बाद बहन भाईयों ने माता पिता के विषय मे अपने भावों का प्रकाश किया।

सुरजीत बराड़:- उन्होंने बताया कि मेरे पिता जी में अनथक मेहनत करने की शक्ति थी और माता जी में अद्म्य साहस था। विरासत मे यह गुण हम बहन भाईयों में भी आए हैं। जहां सब मेहनती हैं, वहां बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने की भी ताकत रखते हैं। माता पिता का बहुत बड़ा उपकार है कि हमें ऐसे भाई बहन दिए हैं, जो प्यार और मेल से रहते है। माता जी की बुद्धि बहुत तीक्षण थी, अनपढ़ होकर उन्हें शरीर सम्बन्धी भी बहुत ज्ञान था, राजनीति, खेलों आदि का भी ज्ञान रखती थी। पिता जी के भीतर देव समाज वा गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा थी, उनका सबसे बड़ा उपकार है कि वह हमें ऐसे गुरू से जोड़ गए और हम पापों वा मिथ्याओं से बच गए, विज्ञान मूलक दृष्टिकोण बन गया। ऐसे माता पिता की सन्तान होना हम सबके लिए गर्व की बात है।

डा० सतिन्द्र ढिल्लों:- वैसे तो सबके माता पिता बच्चों के लिए विशेष होते हैं, परन्तु मुझे लगता है कि मेरे माता पिता बिल्कुल अलग थे। मैं चौथी लड़की थी, पर मुझे गर्व है कि वह मुझसे सबसे ज़्यादा प्यार करते थे। मेरी माता ने अपनी सूझ बूझ से मेरे बेटे के जन्म पर मुझे दवाई से *reaction* होने पर दूसरी बार मुझे जिन्दगी दी थी। पिता जी हमेशा दूसरों की सेवा के लिए प्रेरित करते रहते थे। ऐसे भाई बहन दिए जो मेरे दुख सुख में सदा खड़े रहते हैं। ऐसी समाज के साथ

जोड़ा जिसमें हमारी सब प्रकार की भलाई हुई है। उनके उपकारों का बदला दिया नहीं जा सकता (उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे)।

नताशा गिल:- मुझे अपना बड़ा सौभाग्य अनुभव होता है कि मेरे दादा दादी ने हमें ऐसा अच्छा परिवार दिया है और हम सब एक दूसरे से मेल से रहते हैं, उनकी परवरिश वा हमें दी विरासत के कारण है। मेरा सौभाग्य है कि मैं इस परिवार की सदस्य हूं।

मन्नत:- (पोती की बेटी) मैं बहुत छोटी थी, जब पिता जी, बेजी चले गए, परन्तु बचपन की मधुर यादें उनसे जुड़ी हुई है। पिता जी मेरे साथ ताश खेलकर बहुत खुश होते। बेजी मुझे मेरे माता की डांट से बचाते। बेजी मुझे बहुत प्यार करते थे। मुझसे कहानियां सुनते और कभी रोकते नहीं थे।

सरल गिल : पिता जी ने फार्म पर बहुत मेहनत करके हमें पाला है। बेजी बहुत Strong थी। बरसातों में gum बूट डालकर लेबर के पीछे पानी में घूमती रहती। यह कहते हुए वह रोने लग गए। और कहा कि हम उनके उपकारों का बदला कभी दे ही नहीं सकते।

इसके बाद जगदीष जी ने एक और दिल को छूने वाला भजन गाया और चार बार जय ध्वनि करके इस सभा को समाप्त किया। सारा वातावरण बहुत प्रभावशाली रहा। इसके बाद सब आने वालों को बहुत शानदार लंच दिया गया। इस प्रकार यह सारा प्रोग्राम सफलता से समाप्त हुआ।

एक हाजरीन

बहन हो तो ऐसी

भाई बहन का रिश्ता बहुत अन्मोल होता है। कहते हैं न कि इस रिश्ते में दूध की धारा की सांझ है। बचपन में बहन भाई इकट्ठे खाते, पीते, खेलते, हंसते गाते और सोते हैं। एक के इधर उधर हो जाने पर व्याकुल हो जाते हैं। लड़ते, झगड़ते भी हैं, परन्तु कुछ पल के लिए, फिर वही प्यार उमड़ पड़ता है। ज्यों ज्यों बड़े होते हैं, अपने अपने सुख हावी होने लगते हैं। स्वार्थ जितना किसी में अधिक हो, उतना ही रिश्ते में कड़वाहट आ जाती है। एक बहन भाई कोई उन्नति करता है, उसका बच्चा उन्नति करता है, तो खुश होने के स्थान में अकसर ईर्षा जाग उठती है। शादी के बाद बीवी कैसी है, बहुत कुछ रिश्ते इस पर निर्भर करते हैं। आजकल परिवार छोटे हैं, अकसर परिवार में एक बहन, एक भाई होता है, तो इस रिश्ते की अहमियत और भी बढ़ जाती है, जहां कई बहनें भाई एक दूसरे पर जान देते हें, दुख, सुख में दिवार की तरह खड़े हो जाते हैं, वहां ऐसे भी हैं जो अपने स्वार्थों के लिए इतनी दूरी बना लेते हैं कि एक दूसरे का मुंह तक देखना पसंद नहीं करते, बोलचाल का रिश्ता भी बन्द हो जाता है, निन्दा चुगली करके दूरीयां और बढ़ा ली जाती हैं, एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं, कत्ल तक हो जाते हैं। बहनें जिनको नर्म दिल कहा जाता है, कई जगह पर भाई से जयादाद बांटने के लिए इस खूबसूरत रिश्ते को गंवा बैठती हैं।

मेरा सौभाग्य है कि हम बहन भाईयों का रिश्ता बहुत प्यारा रिश्ता है। छोटे होने के नाते सब बहन भाई जहां मुझे सन्मान वा स्नेह देते हैं, वहां दुख सुख में सब भाग उठते हैं। किसी का कोई स्वार्थ का रिश्ता नहीं, केवल सन्मान वा प्यार का रिश्ता है।

जहां मैं अपनी जिस बहन का जिकर कर रही

हूं, वह हम सब बहनों से छोटी है और हम सबसे ज्यादा शिक्षित है, तीनों यूनिवर्सिटियों में बहुत आदर सत्कार है, दूसरों की सहायता करने में वह हमेशा अग्रणी रहती है। उच्च पद रखकर भी बेहद दीन और नम्र है। यह रुप तो उसका सबके लिए है। बहनों के रिश्तों में उसका रुप बहुत सराहनिय है।

पिछले साल मेरी एक बहन जो कैनेडा में रहती है, उसके घुटने का अप्रेशन होना था, उसके लिए मेरी इस छोटी बहन ने अपनी सेवाएं देने का इरादा कर लिया वह कैनेडा गई और एक नर्स, एक बहन, एक सेवाकरी की भूमिका में अपने आपको अर्पित कर दिया। हस्पताल में मरीज़ को सम्भालना, उसकी सब ज़रूरतों को पूरा करना वैसे ही कठिन काम होता है, परन्तु यह हस्पताल 70 - 75 किलोमीटर घर से दूर था, जहां से सुबह वह खाना आदि लेकर जाती और पूरा दिन हस्पताल की कुर्सी पर बैठी रहती। सबसे दुखदाई बात यह हुई कि घुटनों के साथ-साथ बेरी बहन को सख़्त नमोनियां हो गया, जिससे उसके होश हवास गुम हो गए, पता नहीं लग रहा था कि अगले पल क्या होना था, ऐसी हालत में वह पूरा दिन उसका हाथ पकड़ कर बैठी रहती और जहां आंसू बहाती वहां प्रार्थना भी करती रहती कि किसी तरह वह इस मुसीबत से निकल आए। आखिर डाकटरों की मेहनत और उसकी सेवा वा प्रार्थना रंग लाई और वह मौत के मुंह से बच गई। पूरा एक महीना छोटी बहन की तपस्या वा सेवा से मेरी बहन चलने फिरने के लायक हो गई। उसकी सेवाओं के विषय में जब दूसरी बहन बताती है तो वह कृतज्ञता के आंसु बहाने लगती है। इतने दुख, और मेहनत से गुज़रकर इस बहन ने कभी शिकवा नहीं किया।

पिछले दिनों मेरी तबीयत खराब हो गई, उस पर भी जितना उसने ख़्याल रखा, बार-बार चक्कर लगाए, मुझे खुश रखने के लिए प्रोग्राम बनाए और जहां तक मेरे धर्मपति के कुछ दिन बाहर जाने पर मेरे पास ही डेरा लगा लिया, अपनी बहुत busy ज़िन्दगी से अधिक से अधिक समय मुझे दिया, उस सबके लिए मैं जितना भी धन्यवाद दूं थोड़ा है, बार बार मुहं से यही निकलता है कि बहन हो तो ऐसी हो।

सुरजीत बराड़

अन्मोल वचन

* हम दूसरों का अहित करने में कभी विचार नहीं करते किन्तु कोई हमारा अहित करता है तो क्रोध से भर जाते हैं और हमारा खून खौलने लगता है।
* आपका चरित्र ऐसा हो जो आपका बचाव कर सके और आपको सफाई पेश करने की अवश्यकता न पड़े।
* शिक्षा का मुख्य उद्धेश्य है मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करना और उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना। जिस शिक्षित व्यक्ति को सत्य और सरल व्यवहार करना न आए उसे शिक्षित नहीं कहा जाता।

शुभ संग्राम

इस वर्ष भी श्रीमान बलदेव सिंह और श्रीमती सुरजीत कौर जी अमरीका में इंडियाना आकर अपने बेटे डा० देव अनुरूप जी और उनके परिवार को मिलने और कुछ अर्सा वहां रहने के लिए गए। सुअवसर से श्रीमान जी की बेटी डाक्टर नम्रता जी भी अपने दोनो बच्चों समेत, सारा समय वहां उपस्थित थी। श्रीमान जी ने समय का औचत्य देखकर इस अवसर को सुफल बनाने का प्रयत्न करने के लिए सोचा इसलिए वहां हर सप्ताह के अन्त में शनिवार और ईतवार सभाएं रखनी शुरू की, जिसमें श्रीमान जी के बेटे डाक्टर देव अनुरूप जी उनकी *Teenagers* दो बेटियां, कभी कभी उनकी धर्म पत्नी जी और बेटी नम्रता के दोनों जवान बेटे डाक्टर प्रतीक जी, और राहत जी भी शामिल होते रहे। इस प्रकार 10 - 15 सभाएं वहां की गई। श्रीमान जी के निवास कक्ष में साथ वाले एक छोटे कमरे में पू० भगवान की छवि का अर्चन होता रहा, वहां ही कुर्सियां बिछाकर श्रीमान जी सभा करवाते रहे। जब केवल इंगलिश में समझने वाले जन शामिल होते थे तो सभाएं इंगलिश में कराई जाती थी।

सभाओं के विषय में इस प्रकार से रखे जाते थे,

1) चाहे मनुष्य कितना सुशिक्षित, सूझवान धनवान वा उच्च पदधारी हो, उसे धर्म सम्बन्धी ज्ञान की अत्यन्त अवश्यकता।
2) उच्च और जिन्दा संगत क्या होती है और उसकी क्यों ज़रूरत है।
3) मनुष्य का परिचालक कौन है?
4) अपने आप को जानने का क्या अर्थ है, और किस तरह जान सकते हैं?
5) मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कौन है?
6) इस दुनियां में प्रभावों को खेल।
7) धर्मवान बनना क्या? उच्च, बनना, श्रेष्ट बनना ही धर्म जीवन है।
8) अच्छा कैसे बना जा सकता है?
9) मनुष्य दूसरों के गुण, उपकारी और उनके उपकार, दूसरों की पीड़ा वा हानि और अपनी नीचता के सम्बन्ध में प्राय: अन्धे हैं।
10) श्रद्धा के सम्बन्ध में।
11) कृतज्ञता के सम्बन्ध।
12) परसेवा के सम्बन्ध में आदि आदि।

परम पू० भगवान के अद्भुत देवरूप, उनकी अद्भुत ज्योति के और उनके लासानी कारज की महानता को प्राय: हर सभा में श्रद्धा से भरकर दरशाने की कोशिश की जाती रही। ऐसे रूप और ऐसे कारज के साथ जुड़ना क्यों अनिवार्य है, इस सचाई को रोशन किया जाता रहा।

बेशक मनुष्य का हृदय ऐसा है कि सत्संग के उच्च प्रभावों को जल्दी खो बैठता है, फिर भी संगत के प्रभाव कुछ जनों पर विशेष पड़ते हुए प्रतीत हो रहे थे। कुछ हृदयों की गुरू महाराज और उनके कारज के प्रति घोर उदासीनता, कुछ कुछ दूर होती महसूस हो रही थी और कुछ बच्चों की गुरू महाराज और उनके कारज के सम्बन्ध में स्वभाविक दूरियां जो हो रही हैं, वह कम हो रही थी। डाक्टर देव अनुरूप के प्रभावित होने पर, जब परिवार सहित कुछ दिन बाहर गए तो उन्होंने बच्चों को तीन बार बिठाकर भली बातों की तरफ उनका ध्यान फेरा। एक दो जनों ने अपने आप महोत्सव में शामिल होने की इच्छा महसूस की।

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सहायकारियों की कृपा से एक एक बार बड़ा सुन्दर दृष्य पैदा होता था, जब सारे परिवारिक जन मिलकर सभा के आरम्भ में भजनों का गान करते थे, जिससे बहुत अच्छा वातावरण बन जाता था।

परिवार के उच्च उच्छवास का इस बात से भी परिचय मिलता था, जब डाक्टर देव अनुरूप बराड़ के साथ साथ बाकी सब जन परम पू० भगवान देवात्मा की उच्च गर्जना से चार बार जय ध्वनि करते थे

ऐसी कामना है कि किसी प्रकार यह संगत का सिलसिला ज़्यादा से ज़्यादा जारी रह सके और अधिकारी जन योग्यता अनुसार अधिक से अधिक गुरू महाराज के कारज के कुछ निकट हो सकें।

अमरीका में श्रीमान जी प्राय: हररोज कितने शहरों और नगरों में लम्बे लम्बे फोन करते थे और इस प्रकार फोन पर उनके भले का संग्राम भी करते थे। सुशील जी ने भी काफी लम्बे समय तक फोन पर बातें करते रहे। श्रीमान बलवन्त राय जी टरांटो से भी बार बार श्रीमान से बातें करते रहे। अवतार सिंह बराड़ जी और जसविन्द्र सिंह चहल जी का भी फोन आता रहा। इस प्रकार इस अवसर को सफल करने की कोशिश की गई। श्रीमान जी को अधिक अध्ययन करने और कुछ लेरव लिखने का भी अच्छा अवसर मिल गया।

संगरूर

श्रीमान बलदेव सिंह जी 28 अगस्त को संगरूर में गए वहां एक रात ठहरकर श्रीमान सीता राम जी, डाक्टर नवजोत जी और अन्य परिवारिक जनों से मिलकर रात के 11 बजे तक हितकर बात चीत करते रहे। डाक्टर नवजोत जी के पुरज़ोर आग्रह और इच्छा को देखते हुए संगरूर साधन मन्दिर सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव मनाने का फैसला किया गया, अगले दिन सुबह 8 बजे के करीब से 10 बजे तक श्रीमान बलेदव सिंह जी ने डाक्टर साहिब के सामने यात्रियों को ठहराने और खाने आदि के बनाने आदि के स्थानों को निरीक्षण किया।

डेराबसी :

श्रीमान बलदेव सिंह जी मिशन के लिए धर्म सम्बन्धियों द्वारा बन रहे स्थान पर 20 अगस्त को पहुंचकर देख रेख की फिर उसके 30 तारीख को भी श्रीमान जी कुछ धर्म सम्बन्धियों के साथ ज़रूरी विचार आदि के लिए गए।

एक सेवक

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts